छात्र विमर्श : चेतना और चिंतन

डॉ. राजश्री लक्ष्मण तावरे
शंकरराव पाटील महाविद्यालय, भूम
मोबाइल नंबर – 9225599106
ई–मेल – tawarerajshree@gmail.com

शोध सारांश –

आज के संदर्भ में, छात्र विमर्श महत्वपूर्ण विमर्श है क्योंकि यह छात्रों को महत्वपूर्ण सोच और समस्या–समाधान कौशल विकसित करने में मदद करता है । आज की दुनिया में, छात्रों को अक्सर जटिल मुद्दों के बारे में सोचने और उनके बारे में निर्णय लेने की आवश्यकता होती है । छात्र विमर्श छात्रों को विभिन्न दृष्टिकोणों पर विचार करने और अपने विचारों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करने में मदद कर सकता है । यह उन्हें समस्याओं को नए तरीकों से हल करने और रचनात्मक समाधान विकसित करने में भी मदद कर सकता है ।

छात्र विमर्श भी छात्रों के सामाजिक और भावनात्मक विकास के लिए महत्वपूर्ण है । यह छात्रों को दूसरों के साथ बातचीत करने और सहयोग करने के कौशल विकसित करने में मदद कर सकता है । यह उन्हें सहानुभूति और समझ विकसित करने में भी मदद कर सकता है । आज के संदर्भ में, छात्र विमर्श को सफल बनाने के लिए, शिक्षकों को कुछ बातों का ध्यान रखना चाहिए । सबसे पहले, उन्हें छात्रों को विमर्श के नियमों और प्रक्रियाओं को समझने में मदद करनी चाहिए । दूसरा, उन्हें छात्रों को विमर्श में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए । तीसरा, उन्हें विमर्श को एक सकारात्मक और सहायक वातावरण में आयोजित करना चाहिए ।

छात्र भविष्य के मुखर स्वर है । जिनके स्वरों को सही दिशा और ऊर्जा मिलना आवश्यक है । वैश्विक समाज में बालकों और छात्रों के लिए चिंता का स्वर दिखाई देता है । पारिवारिक भूमिका को लेकर छात्रों में एक अजब तरह की उपेक्षा नज़र आ रही है । यह उपेक्षित नज़र आज की प्रातियोगिक समाज का परिणाम है । जिसमें यह छात्र अपना स्थान बनाने के लिए प्रयास कर रहे हैं । इन प्रयासों में छात्र अपनी जिज्ञासा के साथ ही जीवन जी रहे हैं । आत्महत्याओं में छात्रों की बढ़ती संख्या चिंता का कारण है, जिसको काफ़ी संवेदनशीलता के साथ सोचना आवश्यक है । छात्रों का राजनीतिक रूप में इस्तेमाल किया जाता रहा है । राजनीतिक मोहरे के रूप में छात्रों को तैयार किया जाता है, जिनके माध्यम से राजनीतिक दाँव–पेंच आसानी से खेले जाते हैं। रामवृक्ष कुमार अपनी कविता में लिखते हैं कि,

"खेल–खेल में शिक्षा हो पर
शिक्षा को खेल समझ बैठे,
अब राजनीति के मंचों पर
तित्तिल सा खूब उलझ बैठे ।"[1]

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा छात्रों के विकास के लिए आवश्यक है । परंतु छात्रों के हित के लिए राजनीतिक तंत्र के बीच में दम घुटते नजर आते हैं । 'चुनावी वादे एवं शिक्षा व्यवस्था' में तय्यब अहमद कहते हैं कि "गुणवत्तापूर्ण शिक्षा जनसामान्य तक

सर्वसुलभ बनाना किसी भी देश की सत्ता का प्राथमिक दायित्व है तथा यहाँ सभी राजनीतिक दलों का संकल्प होना चाहिए । किन्तु विडम्बना यह है कि इस मुद्दे पर सत्ता पक्ष एवं विपक्षी दलों के पास ऐसे संकल्पों का अभाव है ।"[2] शिक्षा व्यवस्था में राजनीतिक दलों का सहभाग दिखाई देता है । परंतु राजनीतिक दल छात्रों के हित के पक्ष में बहुत कम नजर आते हैं । परंतु उनका इस्तेमाल राजनीतिक मुद्दों के लिए जरूर किया जाता है । शिक्षा को जनसामान्य तक पहुचाना आवश्यक है, जिसके कारण जनसामान्य में सामाजिक चेतना का विकास हो सके ।

शिक्षा व्यवस्था में खर्च किया जाता है, उसके आधार पर किसी भी देश का विकास निर्भर होता है । "शिक्षा का बजट कम होता चला गया ऐसा इसलिए भी हुआ कि ऊंचे पदों पर विराजमान लोग जिनका काम पॉलिसी बनाना है, वे देश की शिक्षा पर खर्च किये जाने वाले पैसों को केवल बर्बादी समझते हैं । वे यह भी झुठला देते हैं कि यह पैसा जनता की मेहनत की कमाई है और टैक्स की सूरत में वसूल किया जाता है । यदि यह पैसा शिक्षा पर खर्च किया जाता तो इससे बेहतर और क्या होता । लेकिन इनका उद्देश्य यह है कि जो भी शिक्षा सरकारी बजट पर दी जाती है उसको प्राइवेट कंपनियों को दे दिया जाए। मतलब यह है कि शिक्षा भी दूसरी चीजों की तरह बाजार में बेच दी जाए ।"[3] अतः शिक्षा में बाज़ार आया है । शिक्षा में बाज़ार का आगमन भारत ही नहीं बल्कि विश्व में चिंता का विषय है । जिस पर काफ़ी संवेदनशीलता के साथ सोचना आवश्यक है ।

शिक्षा में आर्थिक व्यवहार की बढ़ोत्तरी भी छात्रों के लिए चिंता का विषय है, जो जनसामान्यों के पक्ष में नहीं है । इसलिए छात्रों के हित में सोचना तथा उनके भविष्य को निर्धारित करने के लिए उचित निर्णयों को लेना आवश्यक है, "एक तरफ फीस में बढ़ोत्तरी को फंड पैदा करने के नाम पर सही करार दिया गया है, वहीं जनता के पैसों को पानी की तरह बहाया जा रहा है । ..... टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज में भी फीस बढ़ाने और वंचित वर्ग को दी जाने वाली स्कॉलरशिप को खत्म किये जाने के विरुद्ध लंबे समय तक लड़ाई चली लेकिन प्रशासन बज़िद रहा । फीस न केवल सोशल साइंस बल्कि साइंस से संबधित दूसरी रिसर्च की भी बढ़ा दी गयी ।"[4] सामाजिक और आर्थिक स्थिति से दुर्बल लोगों के शैक्षिक सहभागिता को बढ़ाने के लिए स्कॉलरशिप दी जाती है, परंतु उनका यह भी अधिकार छीना जा रहा है । इन स्कॉलरशिपों को खत्म किया जा रहा है, जिसके कारण होनहार और मेहनती बच्चों को शिक्षा से वंचित रखा जा रहा है । "शिक्षण संस्थानों एवं अन्य शिक्षा संबधी उपलब्धता के बावजूद वर्तमान समय में छात्रों के लिए गरीबी उनकी शिक्षा में सबसे बड़ी रुकावट है । गरीबी शिक्षा के मार्ग में बाधा न उत्पन्न करे इसके लिए सरकारें छात्रों के लिए छात्रवृत्ति की सुविधा पहुंचाती है । हिंदुस्तान में भी छात्रों के लिए विभिन्न छात्रवृत्तियाँ उपलब्ध हैं लेकिन या तो छात्रों को जानकारी नहीं होती या फिर सरकारी कार्यों में अनुशासनहीनता एवं लंबी जटिल प्रक्रिया के कारण छात्र इन योजनाओं से लाभ नहीं उठा पाते ।"[5] छात्रवृत्ति छात्रों के शैक्षिक विकास के लिए उपयोगी जरुर हैं, परंतु उनको सही रूप में निर्देशित करना काफी आवश्यक है ।

छात्रों को विभिन्न छात्रवृत्तियाँ दी जाती है, परंतु आज के इस महँगाई के दौर में शिक्षा संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए असमर्थ हो जाते हैं, "यदि किसी छात्र को कोई स्कालरशिप मिलती भी है तो बढ़ती हुई महँगाई के कारण वह छात्र शिक्षा की आवश्यकताओं को पूरा करने में असमर्थ हो जाता है । यह स्कालरशिप इस लिए भी पर्याप्त नहीं हैं कि छात्रों की संख्या में बढ़ोतरी हुई हैं लेकिन छात्रवृत्ति के लिए उपलब्ध बजट में सरकार की तरफ से बढ़ोतरी नहीं की गयी । यह परिस्थिति इस बात की मांग करती है कि सरकारें अनावश्यक खर्चों में कटौती करते हुए देश के उज्ज्वल भविष्य के लिए शिक्षा पर अधिक से अधिक पैसे खर्च करें ।"[6] अतः देश के भविष्य के लिए छात्रों के शैक्षिक सहभागिता को बढ़ाने के छात्रवृत्ति योजनाओं को बढ़ावा देना आवश्यक है ।

युवाओं की राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक समस्याएँ रोजगार के इर्द–गिर्द घूमती नजर आती है । रामवृक्ष कुमार कहते हैं –

"न नौकरी न रोजगार कहीं
पढ़ रहे लगाये आस यही
आज नहीं तो कल ही सही
निकलेगी कोई राह कहीं।"[7]

शिक्षा और रोजगार दोनों एक–दूसरे के लिए आवश्यक तत्व है । शिक्षा के सिवाय रोजगार नहीं, रोजगार (पैसै) के सिवाय शिक्षा नहीं इसलिए छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देना आवश्यक है । "भारत दुनिया में सबसे अधिक युवा जनसंख्या वाला देश है । यहां हर साल लाखों एवं करोड़ों की संख्या में छात्र एवं युवा रोज़गार के मैदान में कदम रखते हैं ।"[8] अतः आज बेरोजगारी के कारण विभिन्न समस्याओं का सामना छात्रों को करना पड़ता है । जिसके कारण शिक्षा के प्रति छात्रों में उदासीनता नजर आती है ।

निष्कर्ष

अतः आज भारत का प्रत्येक छात्र विभिन्न समस्याओं से गुजर रहा है । परिवार और देश के विभिन्न इकाइयों में सबसे उपेक्षित छात्र होते हैं, उनकी क्षमताओं पर सवाल खड़े किए जाते हैं । आज छात्र विभिन्न तनावों के बीच में प्रतियोगिक समाज में अपनी सांस को ठीक तरह से ले नहीं पा रहे हैं । छात्र विमर्श से साबित होता है कि 'चेतना' और 'चिंतन' छात्रों के शिक्षात्मक और व्यक्तिगत विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं । 'चेतना' के माध्यम से छात्र अपने आत्मा के साथ संबंध स्थापित करते हैं, जबकि 'चिंतन' से उनकी सोचने की क्षमता में सुधार होता है । इस अंतर्निहित संबंध के माध्यम से, छात्रों को समस्त शैक्षिक अनुभव में उच्च स्तर की सामग्री और समझने की क्षमता प्राप्त होती है । इस विमर्श ने शिक्षा प्रणाली में सुधार के लिए सुझाव और छात्रों के लिए सार्थक सुझाव प्रदान किया है, जिससे आने वाले शिक्षा क्षेत्र में और भी सुस्त बदलाव की आवश्यकता हो ।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

१.https://www.google.com/amp/s/www.amarujala.com/amp/kavya/mere-alfaz/rambriksh-kumar-vidyarthiyon-ki-vyatha-1639714668556
२. तय्यब अहमद – छात्र विमर्श, छात्र चेतना और संकल्प का प्रतीक, संपादकीय, अप्रैल, 2019
३. (वहीं संपादकीय)
४. (वहीं संपादकीय)
५. (वहीं संपादकीय)
६. (वहीं संपादकीय
७.https://www.google.com/amp/s/www.amarujala.com/amp/kavya/mere-alfaz/rambriksh-kumar-vidyarthiyon-ki-vyatha-1639714668556
८. वहीं संपादकीय